Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 10 ~ Issue 1 (2022) pp: 76-80
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि एवं जनतांत्रिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ अनामिका सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर , समाजशास्त्र
एम एल के पी जी कॉलेज , बलरामपुर,

सारांश

शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि और जनतांत्रिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए, एक विस्तृत रूप से शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि और जनतांत्रिक अभिवृत्ति के प्रभावों को समझना होगा। शिक्षकों की संतुष्टि और उनके काम से संबंधित सुविधाओं का विश्लेषण करने के लिए, हम शिक्षकों के उनके वेतन, उनके काम की विस्तार के समान अन्य विशेषताओं का मूल्यांकन कर सकते हैं। हम शिक्षकों की संतुष्टि और उनके काम से संबंधित सुविधाओं को मापने में सफल होने के लिए, अनुसंधान कर सकते हैं कि उनकी भूमिका और उनकी उपलब्धियों से संबंधित आम जनता की निरंतर मांगों में क्या प्रभाव होता है। इसके अतिरिक्त हम शिक्षकों के जनतांत्रिक अभिवृत्ति से जुड़े विभिन्न पहलुओं का भी विश्लेषण कर सकते हैं। कुछ उदाहरणों में शामिल हैं कि क्या शिक्षक अपनी कक्षाओं में लोकतांत्रिक मूल्यों और प्रथाओं को बढ़ावा देते हैं, क्या वे छात्र स्वायत्तता और भागीदारी को बढ़ावा देते हैं, और क्या वे समुदाय-उन्मुख प्रथाओं में संलग्न हैं। जनतांत्रिक अभिवृत्ति को मापने के लिए, हम सर्वेक्षण, फ़ोकस समूह और साक्षात्कार जैसे गुणात्मक शोध विधियों का उपयोग कर सकते हैंइन दो कारकों का तुलनात्मक विश्लेषण हमें शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि संतुष्टि और जनतांत्रिक अभिवृत्ति के बीच संबंध और छात्रों पर उनके प्रभाव को समझने में मदद कर सकता है। हम मूल्यांकन कर सकते हैं कि क्या उच्च स्तर की व्यावसायिक संतुष्टि, जनतांत्रिक अभिवृत्ति से जुड़ी है, और क्या जनतांत्रिक अभिवृत्ति वाले शिक्षक छात्र सीखने और जुड़ाव को बढ़ावा देने में अधिक प्रभावी हैं। कुल मिलाकर, शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि और जनतांत्रिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन शिक्षकों और उनके छात्रों पर इन कारकों के प्रभाव में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है, और शिक्षण पेशे में व्यावसायिक संतुष्टि और लोकतांत्रिक दृष्टिकोण दोनों को बढ़ावा देने के लिए रणनीतियों की पहचान करने में मदद कर सकता है।

प्रस्तावना (Introduction) -

भारत के भाग्य का निर्माण करने वाले शिक्षकों का व्यवसाय से संतुष्ट होना अत्यंत आवश्यक है। व्यावसायिक संतुष्टि का तात्पर्य व्यक्ति की शारीरिक व्यक्तिगत एवं सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति होना है। शिक्षण प्रक्रिया के तीन प्रमुख अंग हैं – शिक्षक, शिक्षार्थी तथा सामाजिक परिवेश। शिक्षक की व्यावसायिक संतुष्टि का प्रभाव उनके कार्य की गुणवत्ता पर दिखाई देता है। प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षक की व्यावसायिक संतुष्टि एवं जनतांत्रिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। हाई स्कूल स्तर के 100 पुरूष एवं 100 महिला शिक्षकों के न्यादर्श पर सर्वेक्षण विधि से कार्य किया गया। व्यावसायिक संतुष्टि मापनी एवं शिक्षक जनतांत्रिक अभिवृत्ति मापनी को प्रशासित किया गया। सांख्यिकी गणना द्वारा पुरूष व महिला शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि में अंतर पाया गया। महिला शिक्षकों में पुरूष शिक्षकों की अपेक्षा व्यावसायिक संतुष्टि अधिक पायी गयी। दोनों समूहों की जनतांत्रिक अभिवृत्ति में अंतर नहीं पाया गया। पुरूष व महिला शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि व जनतांत्रिक अभिवृत्ति के मध्य कोई सम्बन्ध नहीं पाया गया। यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा कि जब व्यावसायिक संतुष्टिपूर्ण शिक्षक उपलब्ध होंगे तभी वे मनोवैज्ञानिक ढंग से बालकों की रूचि, क्षमता और उनकी मनोदशाओं को समझकर शिक्षण कार्य करेंगे और जनतांत्रिक, धर्मनिरपेक्ष एवं समाजवादी राष्ट्र के उद्देश्यों को पूरा करने में अहम् भूमिका निभायेंगे। अतः अध्यापक की व्यवसायिक संतुष्टि का उनकी जनतांत्रिक अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना आवश्यक समझा गया।

शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि

शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि से तात्पर्य उस संतुष्टि या पूर्ति की मात्रा से है जो शिक्षक अपने पेशे में अनुभव करते हैं। यह वह स्तर है जिस पर शिक्षकों को लगता है कि उनकी नौकरी उनकी अपेक्षाओं को पूरा करती है, उनके मूल्यों के साथ संरेखित होती है, और उद्देश्य और पूर्ति की भावना प्रदान करती है। शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि विभिन्न कारकों से प्रभावित होती है, जिसमें नौकरी की सुरक्षा, वेतन, काम का बोझ, पेशेवर विकास और उन्नति के अवसर, सहकर्मियों और छात्रों के साथ संबंधों की गुणवत्ता और स्वायत्तता का स्तर और उनके काम पर नियंत्रण शामिल है। शोध से पता चलता है कि उच्च स्तर की पेशेवर संतुष्टि वाले शिक्षकों के अपने काम में व्यस्त रहने और प्रतिबद्ध होने, उच्च गुणवत्ता वाले काम करने और कक्षा में

अधिक प्रभावी होने की संभावना अधिक होती है। उनके नौकरी में बने रहने, कारोबार की दर कम करने और संगठनात्मक स्थिरता बढ़ाने की भी अधिक संभावना है।

दूसरी ओर, पेशेवर संतुष्टि के निम्न स्तर वाले शिक्षकों को बर्नआउट, प्रेरणा में कमी, नौकरी के प्रदर्शन में कमी और अनुपस्थिति और टर्नओवर दरों में वृद्धि का अनुभव होने की अधिक संभावना है। यह व्यक्तिगत शिक्षक और उनके द्वारा पढ़ाए जाने वाले छात्रों दोनों पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। शिक्षकों के बीच पेशेवर संतुष्टि को बढ़ावा देने के लिए, शैक्षिक संस्थानों के लिए एक सहायक कार्य वातावरण बनाना महत्वपूर्ण है जो सहयोग, संचार और साझा निर्णय लेने को बढ़ावा देता है। यह पेशेवर विकास, उचित मुआवजा और लाभ, सहायक नेतृत्व, और सहयोगियों और छात्रों के साथ सकारात्मक संबंधों के अवसरों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। संक्षेप में, शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि उनके कल्याण, कार्य प्रदर्शन और संगठनात्मक स्थिरता का एक महत्वपूर्ण कारक है। शिक्षण संस्थानों के लिए यह आवश्यक है कि वे एक ऐसा कार्य वातावरण तैयार करें जो शिक्षकों के बीच व्यावसायिक संतुष्टि को बढ़ावा देता है ताकि कक्षा में उनकी व्यस्तता, प्रतिधारण और प्रभावशीलता का समर्थन किया जा सके।

शिक्षकों का लोकतांत्रिक रवैया/ जनतांत्रिक अभिवृत्ति

शिक्षकों का लोकतांत्रिक रवैया उस तरीके को संदर्भित करता है जिसमें शिक्षक लोकतांत्रिक तरीके से छात्रों, सहकर्मियों और व्यापक समुदाय के साथ अपनी बातचीत करते हैं। इसमें समानता, समावेश, भागीदारी और सहयोग जैसे सिद्धांतों को महत्व देना और बढ़ावा देना शामिल है। लोकतांत्रिक दृष्टिकोण वाले शिक्षक अपने छात्रों को सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार के रूप में देखते हैं और उनके इनपुट, फीडबैक और योगदान को प्रोत्साहित करते हैं। वे एक समावेशी और स्वागत योग्य वातावरण बनाते हैं जो विविधता को महत्व देता है और सभी छात्रों के बीच सम्मान और समझ को बढ़ावा देता है। इसके अलावा, एक लोकतांत्रिक दृष्टिकोण वाले शिक्षक भी सहकर्मियों के साथ सहयोग करते हैं और उन्हें निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल करते हैं, टीम वर्क और साझा जिम्मेदारी की संस्कृति को बढ़ावा देते हैं। वे यह सुनिश्चित करने के लिए माता-पिता और व्यापक समुदाय के साथ भी जुड़ते हैं कि वे अपने बच्चों की शिक्षा और स्कूल के विकास में सक्रिय रूप से शामिल हैं। एक सकारात्मक सीखने का माहौल बनाने के लिए एक लोकतांत्रिक रवैया होना आवश्यक है जो छात्र जुड़ाव, भागीदारी और उपलब्धि को बढ़ावा देता है। यह पारदर्शिता, विश्वास और जवाबदेही की संस्कृति को बढ़ावा देने में भी मदद करता है, जो शिक्षकों, छात्रों, अभिभावकों और व्यापक समुदाय के बीच मजबूत संबंध बनाने के लिए आवश्यक है। संक्षेप में, एक लोकतांत्रिक दृष्टिकोण वाले शिक्षक वे हैं जो अपने शिक्षण अभ्यासों, सहकर्मियों और छात्रों के साथ बातचीत और व्यापक समुदाय के साथ जुड़ाव में लोकतंत्र के सिद्धांतों को बढ़ावा देते हैं और उन्हें शामिल करते हैं। वे एक सकारात्मक और समावेशी शिक्षण वातावरण बनाने के लिए आवश्यक हैं जो छात्र की सफलता और सामुदायिक जुड़ाव को बढ़ावा देता है।

शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि और जनतांत्रिक अभिवृत्ति के बीच विरोधाभास

शिक्षकों की पेशेवर संतुष्टि और लोकतांत्रिक रवैये के बीच कोई अंतर्विरोध नहीं है। वास्तव में, दोनों अवधारणाएँ परस्पर जुड़ी हुई हैं और एक दूसरे को पुष्ट कर सकती हैं। जिन शिक्षकों का अपने काम के प्रति लोकतांत्रिक रवैया होता है और छात्रों, सहकर्मियों और व्यापक समुदाय के साथ बातचीत होती है, उनमें उच्च स्तर की पेशेवर संतुष्टि होने की संभावना अधिक होती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि शिक्षण के लिए एक लोकतांत्रिक दृष्टिकोण एक सकारात्मक और समावेशी सीखने के माहौल को बढ़ावा देता है जो सहयोग, सम्मान और छात्र भागीदारी को महत्व देता है। यह शिक्षकों को सार्थक सीखने के अनुभव बनाने के लिए सशक्त बनाकर उद्देश्य और पूर्ति की भावना भी प्रदान करता है जो छात्रों को बढ़ने और सफल होने में मदद करता है।

इसी तरह, उच्च स्तर की पेशेवर संतुष्टि वाले शिक्षक अपने काम के प्रति लोकतांत्रिक रवैया प्रदर्शित करने की अधिक संभावना रखते हैं। उनके अपने काम में लगे रहने, प्रतिबद्ध होने और निवेश करने की अधिक संभावना है, जिससे छात्रों और सहकर्मियों के सहयोग, भागीदारी और सशक्तिकरण में वृद्धि हो सकती है। बदले में, यह पारदर्शिता, विश्वास और जवाबदेही की संस्कृति को बढ़ावा दे सकता है, जो मजबूत संबंध बनाने और सकारात्मक सीखने के माहौल को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक है। इसलिए शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि और लोकतांत्रिक दृष्टिकोण के बीच विरोधाभास के बजाय एक सकारात्मक संबंध है। जो शिक्षक अपने शिक्षण अभ्यासों में एक लोकतांत्रिक रवैया प्रदर्शित करते हैं, उनमें उच्च स्तर की पेशेवर संतुष्टि होने की संभावना अधिक होती है, जिससे कक्षा में जुड़ाव, प्रतिधारण और प्रभावशीलता बढ़ सकती है।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study) – शोध के उद्देश्य निम्नानुसार हैं -

1. हाई स्कूलों में अध्यापनरत पुरूष शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि के स्तर का अध्ययन करना।
2. हाई स्कूलों में अध्यापनरत महिला शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि के स्तर का अध्ययन करना।
3. हाई स्कूलों में अध्यापनरत पुरूष शिक्षकों की जनतांत्रिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
4. हाई स्कूलों में अध्यापनरत महिला शिक्षकों की जनतांत्रिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
5. हाई स्कूलों में अध्यापनरत शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि व जनतांत्रिक अभिवृत्ति की तुलना करना।

*Corresponding Author: डॉ अनामिका सिंह

परिकल्पनाएँ (Hypotheses)-प्रस्तुत शोध की परिकल्पनाएँ निम्नलिखित निर्मित की गयी –

1. हाई स्कूलों में अध्यापनरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।
2. हाई स्कूलों में अध्यापनरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों की जनतांत्रिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।
3. शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि एवं जनतांत्रिक अभिवृत्ति में सह-संबंध नहीं पाया जायेगा।
4. उच्च एवं निम्न व्यावसायिक संतुष्टि वाले शिक्षकों की जनतांत्रिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।

- **परिसीमन (Delimitation) -** प्रस्तुत शोध बलरामपुर के स्कूलों में अध्यापनरत शिक्षकों तक परिसीमित है।
- **शोध प्रक्रिया (Research Process) -** शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।
  न्यादर्श (Sample) – प्रस्तुत शोध हेतु बलरामपुर. में अध्यापनरत 100 पुरूष एवं 100 महिला शिक्षकों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि से किया गया।
- **उपकरण (Tools)** – समस्या के अध्ययन तथा प्रदत्तों के संकलन करने के लिए निम्नांकित प्रमापीकृत उपकरणों का प्रयोग किया गया है -

1. शिक्षकीय व्यावसायिक संतुष्टि मापनी (मानकीकृत) – डॉ. मीरा दीक्षित
2. शिक्षक जनतांत्रिक अभिवृत्ति मापनी – डॉ. वाय. व्ही. श्रीवास्तव एवं प्रो. बी.डी. करमाकर

चर (Variables)- प्रस्तुत शोध में चरों का वर्गीकरण निम्नानुसार किया गया है –

1. स्वतंत्र चर – महिला शिक्षक, पुरूष शिक्षक
2. आश्रित चर – व्यावसायिक संतुष्टि, जनतांत्रिक अभिवृत्ति

सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Operations) – प्रस्तुत शोध में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमान के अंतर की सार्थकता (t मान) तथा सह संबध की गणना की गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 01: "हाई स्कूलों में अध्यापनरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।"

सारिणी क्रमांक – 01: उच्च माध्यमिक विद्यालय के पुरूष एवं महिला शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि के प्राप्तांकों का t मान

क्र.	विवरण	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	स्वतंत्रता की कोटि	t मान	सार्थकता स्तर
1	पुरूष	100	130.75	3.42	198	19.05	P>0.01 सार्थक अन्तर है
2	महिला	100	141.41	4.68			

माध्य के आधार पर पुरूष एवं महिला शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि हेतु + का मान 19.05 प्राप्त हुआ जो 0.05 व 0.01 सार्थकता स्तर पर क्रमशः 1.97 व 2.63 दोनों मानों से अधिक है। पुरूष एवं महिला शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया। अतः परिकल्पना – 01 अस्वीकृत हुई।

परिकल्पना क्रमांक – 02: "हाई स्कूलों में अध्यापनरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों की जनतांत्रिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।"

सारिणी क्रमांक – 02: हाई स्कूल के पुरूष एवं महिला शिक्षकों की जनतांत्रिक अभिवृत्ति के प्राप्तांकों का t मान

क्र.	विवरण	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	स्वतंत्रता की कोटि	t मान	सार्थकता स्तर
1	पुरूष	100	90.92	4.12	198	1.76	P>0.05 सार्थक अन्तर नहीं है।
2	महिला	100	91.90	3.72			

सार्थक अन्तर माध्य के आधार पर पुरूष एवं महिला शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि के लिए 1 का मान 1.76 प्राप्त हुआ जो सार्थकता स्तर 0.05 व 0.01 पर क्रमशः 1.97 व 2.63 दोनों मानों से कम है। अर्थात् हाई स्कूल में अध्यापनरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना – 02 स्वीकृत हुई।

परिकल्पना क्रमांक – 03: "शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि एवं जनतांत्रिक अभिवृत्ति में सह–संबंध नहीं पाया जायेगा।"

सारिणी क्रमांक – 03: शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि एवं जनतांत्रिक अभिवृत्ति के प्राप्तांकों का सांख्यिकी विश्लेषण

क्र	विवरण	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	सह-संबंध मान
1	व्यावसायिक संतुष्टि	200	135.88	6.89	0.07
2	जनतांत्रिक अभिवृत्ति	200	91.41	3.95	

उपरोक्त तालिका से प्राप्त सहसंबंध गुणांक का मान 0.07 है। इससे ज्ञात होता है कि शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि एवं जनतांत्रिक अभिवृत्ति में नगण्य सह–संबंध पाया गया। अतः परिकल्पना – 03 स्वीकृत हुई।

परिकल्पना क्रमांक – 04: "उच्च एवं निम्न व्यावसायिक संतुष्टि वाले शिक्षकों की जनतांत्रिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।"

सारिणी क्रमांक – 04: उच्च एवं निम्न संतुष्टि वाले शिक्षकों के जनतांत्रिक अभिवृत्ति के प्राप्तांकों का t मान

क्र.	विवरण	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	स्वतंत्रता की कोटि	t मान	सार्थकता स्तर
1	उच्च व्यावसायिक संतुष्टि शिक्षकों की जनतांत्रिक अभिवृत्ति	100	93.90	3.74	198	5.41	P>0.01 सार्थक अन्तर है।
2	निम्न व्यावसायिक संतुष्टि शिक्षकों की जनतांत्रिक अभिवृत्ति	100	90.92	4.12			

माध्य के आधार पर उच्च एवं निम्न व्यवसायिक संतुष्टि वाले शिक्षकों की जनतांत्रिक अभिवृत्ति में सार्थक पाया गया जबकि परीक्षण से t का मान 5.41 प्राप्त हुआ जो सार्थकता स्तर 0.05 व 0.01 पर क्रमशः 1.97 व 2.63 दोनों के मानों से कम है। उच्च एवं निम्न व्यवसायिक संतुष्टि वाले शिक्षकों की जनतांत्रिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया गया। अतः परिकल्पना – 04 अस्वीकृत हुई।

निष्कर्ष (Conclusion) – प्रस्तुत लघु शोध में संकलित आँकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित हैं -

1. हाई स्कूलों में अध्यापनरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों में व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया। महिलाओं में व्यावसायिक संतुष्टि पुरूषों से अधिक पायी गयी।
2. हाई स्कूलों के अध्यापनरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों की जनतांत्रिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। दोनों की जनतांत्रिक प्रवृत्ति समान पायी गयी।
3. शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि एवं जनतांत्रिक अभिवृत्ति में सह-संबंध नहीं पाया गया।
4. उच्च एवं निम्न व्यावसायिक संतुष्टि वाले शिक्षकों की जनतांत्रिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया गया।

सुझाव (Suggestions)- शोध निष्कर्षों के आधार पर निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत हैं –

1. शिक्षकों में कार्य संतुष्टि लाने हेतु विभाग द्वारा इनकी समस्याओं का युक्तियुक्त ढंग से निवारण किया जाना चाहिए।
2. विद्यालयों में रिक्त पदों की पूर्ति यथा संभव शीघ्र किया जाना चाहिए, इससे शिक्षकों तथा शिक्षा कर्मियों का कार्यभार संतुलित होगा जिसका विद्यार्थियों तथा समाज पर अनुकूल प्रभाव पड़ेगा।

*Corresponding Author: डॉ अनामिका सिंह

3. शिक्षा कर्मियों व विभागीय शिक्षकों हेतु समय-समय पर गोष्ठियाँ, कार्यशालाओं एवं उन्मुखीकरण कार्यक्रम आयोजित किया जाना चाहिए। साथ ही उन्हें उत्तम कार्य हेतु प्रशंसा, पुरस्कार द्वारा भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इन कार्यक्रमों से शैक्षिक अभिवृत्ति के साथ-साथ अध्यापन कार्य संतुष्टि में भी वृद्धि होगी।

संदर्भ (References)

1. अग्रवाल, अनित : भारत ग्रामीण समाज, विवेक प्रकाशन जवाहर नगर दिल्ली।
2. भार्गव, डॉ. महेश (1997) : "आधुनिक मनोविज्ञान प्रशिक्षण एवं मापन" प्रिंटर्स पैलेस, कमलानगर आगरा।
3. कपिल, डॉ. एच. के. (1997) : अनुसंधान विधियाँ, हरभार्गव पब्लिकेशन आगरा।
4. हेनरी ई. गैरेट : शिक्षा व मनोविज्ञान में सांख्यिकीय, कल्याणी पब्लिकेशन लुधियाना।
5. Nayak, K.D. (1982) : A study of adjustment and job satisfication of married and unmarried lady teachers.
6. Goodlad, J. I. (1991). Why we need a complete redesign of teacher education. Educational Leadership, 49 (3), 4-10.
7. Shah, K.(1982) : Socio economic book ground of primary teachers and job satisfaction.
8. Clark, R.W., Hong, L. K., & Schoeppach, M. R. (1996). Teacher empowerment and site-based management. In J. Sikula, T. J. Buttery & E. Guyton, (Eds.), Handbook of research on teacher education (2nd ed., pp. 595-616). New York, Macmillan.
9. Rolheiser, C., & Glickman, C.D. (1995). Teaching for democratic life. The Educational Forum, 59, 196-206.
10. Meighan, R., & Herber, C. (1986). Democratic learning in teacher education: A review of experience at one institution. Journal of Education for Teaching, 12 (2), 163-72.
11. DeBolt, G. P. (1994). Citizenship education and cooperative learning: Who cares? Social Science Record, 31 (1), 10-11.
12. Dickinson, D. J. (1990). The relation between ratings of teacher performance and student learning. Contemporary Educational Psychology, 15, 142-152.
13. Lezotte, L. (1994). The nexus of instructional leadership and effective schools. School Administrator, 51 (6), 20-23.
14. Edmundson, P. (1995). What college and university leaders can do to help change teacher education? Washington, DC: AACTE.
15. Goldenson, D. (1978). An alternative view about the role of the secondary school in political socialization. Theory and Research in Social Education, 6, 44-72.
16. Herber, C., & Meighan, R. (1986). Democratic learning in teacher education. Educational Review, 38 (3), 273– 282
17. Jones-Wilson, F. C. (1983). The effect upon minorities of the civic education of teachers. Journal of Teacher Education, 34 (6), 11-13.
18. Lesko, W. (2002). Student activism for the next generation. Educational Leadership, 59 (4), 42-44.
19. Pritchard, R. M. (1992). German classroom observed: A foreigner□s perspective. Oxford Review of Education, 19 (3), 213-225.